धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अक्टूबर 2007

- ✠ नेचर में विकास और विनाशकारी कार्य के अटल नियम
- ✠ सत्संग और सत्य धर्म बोध उत्सव
- ✠ सत्य धर्म बोध उत्सव
- ✠ शुभ संग्राम
- ✠ बरसी

महोत्सव मुबारक

पाठक गण। हम सब के लिए यह हर्ष का विषय है कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा, बानी देव धर्म का 157 वां मुबारक शुभ जन्म महोत्सव निकट आ रहा है, इस वर्ष 22, 23, 24 और 25 दिसम्बर 2007 (शनिवार, इतवार, सोमवार वा मंगलवार) को पूरी धूम-धाम और उल्लास पूर्ण ढंग से मनाया जाएगा। सेवक सेविका व पाठकगण इसके लिए अभी तारीखें याद रखकर अपनी छुट्टी का प्रबन्ध कर लें।

वैसे तो महोत्सव सम्बन्धी सूचना अगले दिसम्बर अंक में छापी जाएगी और महोत्सव का प्रोग्राम और निमंत्रण पत्र भी भेजे जाएंगे, परन्तु अभी से इस शुभ पर्व को याद करके अपने दिलों को तैयार कर लें।

दिसम्बर का अंक प्रत्येक वर्ष की तरह गुरु महाराज को मुख्य रखकर देवात्मा अंक छापा जाएगा। इसमें देवात्मा की अद्वितीय विशेषताओं को अपनी योग्यता अनुसार पाठकगण के सामने प्रस्तुत करेंगे। उनके जीवन सम्बन्धी देव लक्ष्य, उनकी विज्ञान मूल्क शिक्षा, उनके आद्वितीय कारज सम्बन्धी ज्योति भरपूर लेख होंगे। उनका विचार पूर्वक पाठ हम सबके लिए बहुत लाभकारी हो सकता है।

अभी से महोत्सव पर स्वयं आने वा अपने सगे सम्बन्धियों को साथ लाने की तैयारी आरम्भ कर दें। अभी से यदि आप प्रेरणा करते रहेंगे और यदि आप इसमें सफल होते हैं, तो पता नहीं किसी जन को कितना लाभ पहुँच जाए, इस द्वारा आप मिशन की सेवा कर सकते हैं।

अपना घर छोड़ने में बहुत सी रूकावटें वा दिक्कतें आती हैं और आएंगी, परन्तु उन्हें परास्त करके अपने भले के लिए यह संग्राम करें और अवश्य पहुँचे।

दूर-दूर से आए हुए साथी सेवकों से मिलने का सौभाग्य मिलेगा, कितना चाव भरा यह समागम होगा, यह सब आपके सहयोग से ही सम्भव है।

महोत्सव के प्रोग्राम की सभाओं की अलग विशेषता होती है। महोत्सव की ही सभाओं ने हम सब में से कितनों की जिन्दगियां बदली हैं, कितनों के घरों में स्वर्ग आया है। कितनों के पाप और मिथ्या गए हैं। प्रवेश सभा रोशनी भरपूर होती है, जो लाभ उठाने के लिए प्रेरणा देती है, उससे वंचित नहीं रहना चाहिए। सारे वर्ष में अपने बचावनहार सत्गुरू के लिए चार दिनों की कुर्बानी, कोई कुर्बानी नहीं, उल्टा गुरू के उपकारों की लड़ी और बढ़ जाएगी। महोत्सव में शामिल होना हमारी प्रतिज्ञा में भी शामिल है।

हमारी दिली कामना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभ उठाएं।

आप सबको सत्य देव की जय

आपका साथी सेवक

बलदेव सिंह

धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 10
अक्टूबर 2007
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

नेचर में विकास और विनाशकारी कार्य के अटल नियम

नेचर सत्य है। वह सदा से है। अब भी है और भविष्य में भी सदा रहेगी। इस नेचर में उसकी शक्तियों के कारण से प्रति क्षण परिवर्तन आता रहता है। यह परिवर्तन दो प्रकार का है। एक विकासकारी दूसरा विनाशकारी। दोनों प्रकार के परिवर्तन के भी नेचर में अटल नियम हैं। उन अटल नियमों के बाहर कभी कोई नतीजा पैदा नहीं होता और नहीं हो सकता। विकासकारी नियमों के कार्य से सदा विकास ही होता है और विनाशकारी नियमों के कार्य से सदा विनाश ही होता है। नेचर में कोई भूल चूक नहीं होती और न ही नेचर में कोई बात अटकलपच्चु होती है। नेचर अपने नियमों के विचार से सदा पूर्ण भरोसे के योग्य है। इसके अतिरिक्त यह बात भी जानने के योग्य है कि यद्यपि नेचर में विनाश और विकास दोनों प्रकार का ही कार्य जारी है, परन्तु यह दोनों तरह का कार्य बराबर - बराबर नहीं होता। नेचर में समय के साथ - साथ उसका विकासकारी कार्य उसके विनाशकारी कार्य पर विजय पाता जा रहा है। दोनों प्रकार के कार्यों में यद्यपि युद्ध का होना आवश्यक है परन्तु इस युद्ध में अंतिम विजय विकास के कार्य की ही होती है या दूसरे शब्दों में सच्चाई या भलाई की होती है या निर्माणकारी शक्तियों की होती है। नेचर का मुख्य लक्ष्य सच्चाई और भलाई का या विकास का साथ देना ही है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह समय के साथ - साथ ऐसे अस्तित्वों को प्रगट करती रहती है जो उसके विकास कार्य के क्रम को आगे बढ़ाते चले जाएं। इसी सिलसिले में मनुष्य जगत के नेचर में जहां कितने वैज्ञानिक और कितने परोपकार अनुरागी जन पैदा करके उसमें कई प्रकार की आश्चर्यजनक उच्च तबदीलियां पैदा की हैं। नेचर ने इसी सिलसिले में सच्चे धर्म अवतार भगवान देवात्मा भी प्रगट किए है कि जो हर प्रकार की बुराई और हर प्रकार के झूठ के पूर्ण शत्रु हैं और हर प्रकार के सच्चाई और भलाई के पूर्ण प्रेमक हैं या नेचर के विकासकारी कार्य के पूर्ण साथी हैं और उसके साथ पूर्ण मेल रखते हैं। वह नेचरगत सब सम्बन्धों में पूर्ण मेल का सच्चा आदर्श रूप रखते हैं। नेचर का और देवआत्मा का मुख्य लक्ष्य एक ही है। इस विषय में भगवान देवआत्मा फरमाते हैं।

अब यद्यपि यह सत्य है कि न केवल मनुष्य जगत में कितने ही अस्तित्वों में मेरे देवप्रभावों से कई प्रकार का श्रेष्ट परिवर्तन आया है बल्कि इससे नीचे के जगतों के अस्तित्वों में भी एक या दूसरी श्रेष्ठता आई है। परन्तु यह भी सच है कि मेरी समाज के नाना लोगों में एक सीमा के बाद उनके नीच अनुरागों के कारण उनकी भलाई का रास्ता बिल्कुल बंद है, इसलिए जैसा कि होना चाहिए था वह पतन की ओर गति कर रहे हैं (फूटकर) तब मैं इस अवस्था में किससे अपील करूं? किससे फरियाद करूं? सिवाए तेरे और कोई नहीं। इसलिए इस समय मैं तेरी ही उन शक्तियों का दरवाजा खटखटाता हूँ जो विकासकारी हैं, जिन तक मेरी ऐसी व्याकुलता के असर पहुंचते हैं और पहुंच सकते है। तेरी ही विकासकारी शक्तियां जहां तक पतनकारी शक्तियों पर विजय लाभ करती हैं, वहां तक भलाई का मार्ग खुलता है और भलाई के आने के लिए अनुकूल सामान पैदा होते है। इसलिए मैं व्याकुल होकर बार-बार यह कामना करता हूँ कि मेरी इस व्याकुलता की शक्ति के बल के अनुसार मेरे परमलक्ष्य की सिद्धि के लिए अनुकूल सामान पैदा हों, अनुकूल घटनाएं पैदा हों। मुझे अपने (वास्तव में तेरे ही) परमलक्ष्य की सिद्धि के लिए ऐसे योग्य जन प्राप्त हों कि जिनका मुंह तेरी ओर हो। तेरे सबसे श्रेष्ठ आविर्भाव की ओर हो।

भगवान देवात्मा ने अपनी उपरोक्त शुभकामना में नेचर को संबोधन करके सहायता के लिए जो अपील की है उससे साफ प्रगट होता है कि देवात्मा का और नेचर का परमलक्ष्य एक ही है अर्थात जैसे देवात्मा सच्चाई और भलाई की विजय चाहते है या विकासकार्य के पूर्ण साथी हैं वैसे ही नेचर का परमलक्ष्य भी यही है और इसलिए नेचर का यह परमलक्ष्य अपनी अंतिम विजय या कामयाबी का बराबर रास्ता निकालते जाने के लिए बाउंड है।

इस विषय में देवात्मा की देववाणी

भगवान देवात्मा नेचर के विकास और विनाश के अटल नियमों के संबंध में 'सिद्धांत दर्पण) नामी पुस्तक में यह फरमाते हैं :-

नेचर में उसके परिवर्तन के द्वारा उसके किसी एक या दूसरे विभाग में विकास होता है और उसके नाना अस्तित्व अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार धीरे-धीरे अधिक से अधिक श्रेष्ट, सुन्दर, हितकर और शक्तिशाली बनते हैं और उसके इस विकास कार्य में उसके जिस-जिस अजीवित व जीवित जगत का जो-जो अस्तित्व सहायक नहीं बनता, वा नहीं बन सकता, वह पतित होता है और पतित होते-होते अपने व्यक्तिगत रूप और गुणों के विचार से पूर्णत: नष्ट हो जाता है।

इसी एक नेचर में उसके क्रमागत विकास से आंतरिक ऐसे अजीवित और जीवित अस्तित्वों में से जो-जो अस्तित्व जहां तक उत्तम और श्रेष्ट बनने की योग्यता रखते हैं, वह वहां-वहां तक उत्तम व श्रेष्ठ बनते हैं और इस विधि से वह परस्पर अनमेल की दशा से निकल कर समय के साथ-साथ धीरे-धीरे मेल की ओर अग्रसर होते हैं और उनमें से जो-जो अस्तित्व पूर्ण मेल की हालत में पहुंचने की योग्यता रखते हैं, वह अन्त में पूर्ण मेल व पूर्ण शांति की हालत में पहुंच जाते हैं। उनमें परस्पर किसी प्रकार की विरोधता व टकराहट नहीं होती, वह सब एक दूसरे के विकास में सच्चे साथी और सहायक बन जाते हैं।

भगवान देवआत्मा ने अपने उपरोक्त वचनों

में नेचर के विकास और विनाश के अटल नियमों और उनके अंतिम अंत की जो व्याख्या की है वह पूर्णत: ठीक है। और ब्रह्मांड को छोड़कर यदि हम केवल अपनी पृथ्वी की सच्ची घटनाओं को ही अपने सामने लाकर देखें तो हमें साफ तौर से भगवान देवात्मा की उपरोक्त देववाणी की सच्चाई नजर आ सकती है। नेचर में जहां विकास और विनाश के नियम अटल रूप से काम कर रहे हैं और दोनों में बराबर युद्ध जारी है और इस युद्ध का एक-एक अंग में एक विशेष समय तक जारी रहना आवश्यक है, वहां इस युद्ध में अंतिम विजय विकास की या सच्चाई या भलाई की होती है। यह सच्चाई उन युद्धों में अभी साफ तौर पर सामने नहीं आ सकती कि जो युद्ध अभी हो रहे हैं बल्कि यह सच्चाई तो केवल उन्हीं युद्धों से साफ सामने आ सकती है कि जो अब खत्म हो चुके हैं। जैसे पशु जगत और मनुष्य जगत का आपस का युद्ध अब खत्म हो चुका है। पांच छ: लाख वर्ष तक पशु जगत के हिंसक जीवों की इस दुनिया में बहुत बड़ी हकूमत रही है अर्थात् इस दुनिया के शेर और भेड़िए आदि ने न केवल पशु जगत के नाना जीवों यथा गाय, भेड़ बकरी का नाक में दम किया हुआ था बल्कि मनुष्य का भी जीवन बसर करना दुभर किया हुआ था। इसलिए कई लाख वर्ष तक मनुष्य हिंसक पशुओं के हाथ में बिन आई मौत का शिकार होता आ रहा था। और मानव जंगलों का बादशाह शेर और भेड़िया ही समझा जाता रहा है। एक-एक मनुष्य बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाता रहा है। क्या यह सच्च नहीं है कि इस भयानक युद्ध में अंतिम विजय मनुष्य की हो चुकी है। अब मनुष्य का पशुओं के ऊपर राज्य है। एक-एक सर्कस के तमाशे में एक-एक साधारण इंसान मामूली हंटर के इशारे से एक-एक हाथी, घोड़े, शेर आदि को जिस प्रकार से नचाता है, वह सर्कस के देखने वालों को भलिभांत विदित है।

क्या यह सच्च नहीं कि हिंसक जानवर दिनों-दिन कम होते जा रहे हैं और वह समय आने वाला है, जबकि चिड़िया घर में नमूने के तौर पर शेर और चीते आदि की मौजूदगी भी मुश्किल से दिखाई देगी। सभ्यता की दुनियां में मच्छर और मक्खियां और सांप आदि सब प्रकार के हिंसक जीव बराबर कम होते जा रहे हैं। यही हाल उदभित जगत का है इस जगत में दिनों-दिन हितकर और सुन्दर पौधे और वृक्ष बराबर बढ़ते जा रहे हैं। यही अटल नियम मनुष्य जगत में भी अटल रूप से काम कर रहा है। क्या यह सच नहीं कि एक समय जार रूस अपनी प्रजा पर बहुत बड़े अत्याचार कर रहा था परन्तु आखिरकार उसका अन्त बहुत भयानक रूप से हुआ है। प्रजा ने तंग आकर बुरी तरह से उसे और उसके खानदान को आग में जला दिया है। इसके पश्चात रूस में जो हकूमत आई उसमें उस समय तक भयानक अत्याचार का सिलसिला कई अंगों में बहुत कम रहा इसलिए इस देश में कई तरह कर बेहतरी भी आई लेकिन लेकिन जो जो हकूमत कई तरह के भयानक अत्याचारों पर तुली हुई है कुछ समय के पश्चात या तो वह सीधे रास्ते पर आ जाएगी या नष्ट हो जाएगी। इसी प्रकार भारत में भी कई अत्याचारी हकूमतों का जो अंत हुआ, वह भी जानने वालों से छिपा हुआ नहीं है। इसी प्रकार मनुष्य के विकास के सिलसिले में लाखों वर्ष पहले जंगली इंसान सभ्य मनुष्य का जिस प्रकार कत्ल और खून कर रहे थे, वह अवस्था भी

अब कहां है? क्या यह सच नहीं कि ऐसे भयानक वहशी से मनुष्यों का प्राय: अंत हो चुका है और बाकी जो रहते भी हैं, उनका भी धीरे-धीरे अंत होता जा रहा है।

कैसर जर्मनी ने 1914 से 1918 तक जो भयानक तबाही मचा रखी थी, उसका जो बुरा अंत कैसर जर्मनी और उसके प्रजा के लिए हुआ है, वह भी जानने वालों से छिपा हुआ नहीं है। नए सिरे से जर्मनी के हिटलर ने जो अत्याचार मचा रखा था उसका भी अंतिम अंत वही हुआ जो पहले कैसर जर्मनी का हो हुआ था।

यह सब घटनाएं ढंके की चोट से प्रगट करती हैं कि नेचर के विकासकारी और विनाशकारी युद्ध में अंतिम विजय विकास की ही होती है। बहुत से वैज्ञानिकों पर अत्याचारी लोगों ने जो जुल्म किए थे, वह भी इतिहास से परिचित लोगों को अच्छी तरह मालूम हैं। क्या अब चारों ओर वैज्ञानिकों को बोलबाला नहीं हो रहा? अवश्य हो रहा है। देव समाज का थोड़े से सालों का इतिहास भी क्या इस सच्चाई को अच्छी तरह प्रगट नहीं कर रहा है कि उसके सच्चाई और भलाई के मिशन में जिन-जिन जनों ने झूठ और बुराई के हथियारों से कई प्रकार की विरोधता की है, वह ऐसा करके जहां एक ओर देवसमाज के कार्य को बंद नहीं कर सके, वहां अपने कई प्रकार के आत्मिक पतन से भी रिहाई नहीं पा सके। इसी तरह और बहुत से दृष्टांत दिए जा सकते हैं। ऐसे सच्चे दृष्टातों को सामने लाकर हमें नेचर की इस सच्चाई को अच्छी तरह देखने और उसका अटल विश्वासी बनने और उसका साथ देने की नितांत आवश्यकता है। नेचर में अंतिम विजय सच्चाई और भलाई या विकास की ही होती है। नेचर का यह अटल नियम कभी भी बंद नहीं हो सकता। इसलिए वह मनुष्य बड़ा अभागा और अपना बहुत बड़ा शत्रु है जो नेचर के इस अटल नियम को नहीं देखता या इसके विरूद्ध चलता है। निश्चय वह मनुष्य महा सौभाग्यवान है जो नेचर के विकास के अटल नियम को देखता और उसका साथ देना चाहता है। इस रास्ते के छोड़कर मनुष्य की उन्नति और किसी तरह भी नहीं है।

(सत्यदेव संवाद 2 अप्रैल, 1940)

प्राकृति के अलग-अलग विभाग के सम्बन्ध में एक तरफ मनुष्य अपनी-अपनी नीच इच्छाओं जिनका बोध लाभ करने के योग्य है और दूसरी तरफ जितने अलग-अलग ऊँचे बोध लाभ करके ऊँची गति की तरफ बढ़ने के योग्य बनते हैं, उतना ही वे विनाश से मुक्ति पा कर विकास की सीढ़ी चढ़ते हैं, और जीवन सम्बन्धी सब प्रकार सुख और शुभ के अधिकारी बनते हैं।

देवात्मा

सत्संग और सत्य धर्म बोध उत्सव

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी सत्य धर्म बोध उत्सव चावभाव से, पूरी तैयारी के साथ शुभवती धर्मशाला सैक्टर 18 में मनाया गया। 19 अगस्त से 25 अगस्त तक विशष सत्संग रखा गया।

साधन स्थान की सफाई, सजावट, माटोज़ आदि लगाने, उच्च कर्मचारियों की फोटोज़ लगाने का काम श्रीमान जगदीश जी कुक्कड़ ने बहुत मेहनत से किया। पू0 भगवान की छवि ऊँचे स्थान पर सुशोभित की गई।

24 - 25 अगस्त से ही यात्री आने लग गए थे। उनके खाने आदि का उचित प्रबन्ध किया गया। हरियाणा, पंजाब, यू. पी. आदि के 15 - 16 स्थानों से लगभग 75 - 80 यात्री बाहर से पहुंच गए थे। लोकल जन भी अच्छी संख्या में शामिल होते रहे। आखरी दिन विशेष भोजन का आयोजन किया गया। अनिल जी और वर्मा जी किताबों के इंचार्ज थे। लोगों ने दिलचस्पी से खाली समय में किताबें पढ़ी।

गुरु महाराज की छवि के अर्चन के लिए सुन्दर फूलों का प्रतिदिन काम जगदीश जी करते रहे और वह श्रीमान दत्त जी के साथ मिलकर भजनों का गान भी करते रहे।

विशेष सत्संग :- 19 अगस्त से 24 अगस्त तक सत्संग की सभाएं खेड़ा साहिब के घर रखी गई। 25 अगस्त को सुबह की सभा धर्मशाला में की गई। इसमें लोकल जन परिवारों सहित और कुछ नये जन भी पहुँचते रहे। कुछ विद्यार्थी भी सभाओं में आते रहे। यह सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई।

यह सभाएं निम्नलिखित विषयों पर होती रही।

1. परम पूजनीय भगवान देवात्मा का निराली शक्तियां लेकर आर्विभूत होना वा उनके द्वारा मनुष्य को नीच जीवन से बचाने वा उनका भला करने का संग्राम करना और अधिकारी जनों के परिवारों का हित करना।

2. प्रभाव क्या होते हैं, कैसे वह इर्द गिर्द के अस्तित्वों को प्रभावित करते हैं, उच्च और नीच प्रभावों के फल। देव ज्योति और देव तेज भरे प्रभावों से मनुष्यों के भीतर अश्चर्य जनक परिवर्तन करते हैं।

3. एक सभा उद्भिद जगत के सम्बन्ध में करवाई गई। हम पौधों के द्वारा आक्सीजन प्राप्त करते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। पौधों से घिरे वातावरण में सैर करने से मनुष्य की 25 - 30 वर्ष आयु बढ़ जाती है।

देव प्रभाव आत्मा के लिए आक्सीजन का काम करते हैं। उन्हें पाने या न पाने में ज़मीन असमान का अन्तर है।

4. लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए "लक्ष्मण रेखा" खींची थी। देवात्मा की शिक्षा, उनके देव प्रभाव लक्ष्मण रेखा का काम करते हैं। अधिकारी मनुष्यों के लिए उनके साथ जुड़ने से उनकी सुरक्षा है, परे जाने में रूहानी मौत है।

5. मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है? दुनियां के समान वा सम्बन्धी प्राप्त करना मनुष्य का लक्ष्य नहीं। आत्म ज्ञान पाना और आत्म कल्याण, Self Culture मनुष्य जीवन का लक्ष्य है।

6. करामातों वा Miracles क्या होते हैं? वह

क्यों झूठे होते हैं, नेचर के नियमों के विरूद्ध कोई करामात सम्भव नहीं। नीच जीवन को मिटाकर किसी को उच्च बना देना सच्ची करामात है। ऐसा काम देवात्मा ही कर सकते हैं और उन्होंने किया है।

7. जंगल राज क्या होता है? केवल स्वार्थ का राज्य। "Kill Whom you can, take what you can" मनुष्य घातक रोगों का शिकार है। पूजा, पाठ उसे नहीं बचा सकते। देवात्मा इन घातक रोगों को दिखाकर, बचने की सार्मथ्य देते हैं।

इन सभाओं में प्रश्न, उत्तर के द्वारा हाजरीन की दिलचस्पी बनाए रखने का यत्न किया गया। एक 2 जन का अपनी ओर ध्यान जाता रहा। किसी अंश यह सत्संग अधिकारी जनों के लिए हितकर सिद्ध हुआ।

सत्य धर्म बोध उत्सव

25 अगस्त प्रवेश सभा, शाम 5:30 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई।

"हमारे पूजनीय सत्गुरु" नामक भजन का गान किया गया। गुरु महाराज का अर्चन करके देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। सभापति जी ने भरे दिल से सहाय प्रार्थना की। फिर "तुम्हारे दर से हे सत्गुरु, धर्म का दान मिल जावे।" भजन गाया गया।

फिर सभापति जी ने फरमाया कि धर्म के दो पक्ष होते हैं, एक ज्ञान और विश्वास और दूसरा उस पर अमल। यदि हम उनको ईष्ट मानते हैं कि जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं, वो उनके सम्बन्ध में धर्म साधन निरर्थक हैं।

हमारे वचन, हमारे ख्याल और अमल ही हमें बनाते हैं या बिगाड़ते हैं, इन्हीं को जानने के लिए यह उत्सव है। हम आत्मा को इसलिए नहीं जानते, क्योंकि हम शक्ति को नहीं जानते। इसलिए धर्मों में लारे लगाए जाते हैं, परन्तु सत्य धर्म में नेचर के सत्य बताए जाते हैं।

पौधों के रोग पूजा से नहीं, कीटनाशक दवाईयों से मिटते हैं, इसी प्रकार आत्मा के रोग "सर्व रोग का औखद नाम" से नहीं मिटते, पाठ से नाम जपने से नहीं मिटते। हमारी हस्ती की रक्षा और विकास के नियम हैं। शरीर को जिन्दा रखने के लिए हवा, पानी और खुराक की आवश्यकता है। आत्मा को जिन्दा रखना है, तो उसके नियमों को जानना होगा। प्रत्येक जिन्दा सैल में आत्मा है। यीशु कल्चर की खोज हुई है। वैज्ञानिक खोज को मानना पड़ेगा।

देव धर्म में गप्पें नहीं बताई जाती समाज में रहने के नैतिक वा धार्मिक नियम हैं। उन्हीं नियमों को जानना है। निर्माण के कामों से आत्मा को निर्माण होता है। ध्वंसकारी कामों से आत्मा ध्वंस होता है।

नित की घटनाएं है। कहीं दादे ने पोते को गोली मार दी, कहीं पत्नी ने पति को मार दिया। सत्य धर्म में सामर्थ्य है कि बदचलन को पवित्र बना दें, घमंडी को नम्र बना दे, स्वार्थी को सेवाकारी बना दें। बुराई के प्रति घृणा संचार होगी, तभी मनुष्य बुराई से बच सकता है। देव धर्म मनुष्य की फितरत को बदलता है।

सभापति जी ने बताया कि देव प्रभावों द्वारा कैसे उनकी अपवित्रता काफूर हो गई, गहरे भावों

से भरकर बताया। उन्होंने बताया कि देव प्रभाव नया वातावरण प्रदान करते हैं। ऐसे वातावरण में आने के लिए सब यात्रीगण का खड़े होकर सम्मान किया।

उन्होंने बताया कि हमें ऐसे होश देने वाले वातावरण की अवश्यकता है। यहां लाभ उठाने की उन्होंने कुछ शर्तें बताई। ठीक समय पर सभाओं में आना, प्रार्थनाशील होकर बैठना, श्रद्धा और कृतज्ञता से भरकर एकाग्रचित होकर योग देना, गुण चिन्तन करना, सेवा के काम करना, तभी हम यहां से पूरा लाभ उठा सकते हैं।

सभा काफी प्रभाव शाली थी, चार बार जय ध्वनि करके सभा को समाप्त किया गया।

26.08.2007 पहली सभा सुबह 8.00 बजे।

विषय :- आत्मिक अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।

यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। उन्होंने फरमाया कि यदि तुम अपना भला चाहते हो, तो तीन बातों का ज्ञान होना अवश्यक है।

(1) विश्व का ज्ञान
(2) अपना ज्ञान
(3) देवात्मा का ज्ञान

अपना ज्ञान पाने के लिए देवात्मा वा ज्ञान पाना अवश्यक है। शारीरिक ज्ञान में अपने Blood pressure, Cholestrol, Sugar level आदि का ज्ञान आवश्यक है।

धर्म मतों में और ज्ञान की चर्चा होती है, अपना ज्ञान नहीं दिया जाता। अपने आपको जानना आत्म बोध है। अपने आत्मा को जानना, उसकी हानि और बर्बादी को जानना, उसकी रक्षा और विकास को जानना <u>आत्मा का ज्ञान</u> वा बोध है।

आत्मिक हानि को जानकर उससे बचना और अपने आत्मा का भला करना आत्म बोध है।

आत्म ज्ञान पाने के लिए शक्ति के स्वरूप को जानना अवश्यक है। बेजान शक्ति से जानदार शक्ति पैदा हो गई। उसका विकास होते-होते वनस्पति जगत, पशु और मनुष्य जगत का विकास हुआ है। मूलत: शक्ति में समानता है, परन्तु विकास से उसमें अथाह अन्तर हो जाता है। आत्मा की शक्ति को विकसित करने में ही हमारा सबसे बढ़कर भला है। दुकान, मकान, धन, जायदाद आदि से बढ़कर आत्मा का बोध है। कामवासना, धन अनुराग, स्वार्थ, घमंड, अहं अनुराग बहुत जबरदस्त घातक शक्तियां हैं। परिवर्तन का क्रम जारी है। अपने भावों के परिवर्तन का ज्ञान आवश्यक है। अपने आलस्य और स्वाद के अनुराग को जानना अवश्यक है। यह बढ़ रहे हैं।

शरीर का बोध :- तली हुई चीजें खाना, अधिक खाना, मीठा वा चटपटा और ज्यादा खाना, शरीर का बोध नहीं। जो परहेज नहीं कर सकता, वह शरीर का बोधी नहीं। जो साफ हवा में सैर वा व्यायाम नहीं करता, अपने शरीर की जांच नहीं करवाता, जो साफ पानी का ध्यान नहीं रखता, वह शरीर का बोधी नहीं। एक आदमी अपना मकान बनाते ही मर गया, परन्तु अपनी बिमारी का ईलाज समय पर नहीं करवाया।

पाप का बोध :- बहुत मुबारक चीज़ है। पवित्रता का बोध होता है, तभी कोई स्त्री अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए जान दे देती है। अपनी सब चिन्ताओं वा क्रियाओं का बोध आत्म बोध है। आत्म बोध का पता तभी लगता है। जब मनुष्य एक-एक नीच क्रिया वा चिन्ता से भय खाने लगे। किसी का धन गन्दगी की तरह बोध हो। स्वाद अनुराग की चिन्ता मात्र से भी दुख और तड़पन बोध हो। किसी भी अनुराग के प्रति दुख और तड़पन के बिना आत्मा बोध पैदा नहीं हो सकता।

यह दुख और तड़पन देव प्रभावों के बिना पैदा नहीं होती। इसलिए आत्म बोध पाने के लिए देवात्मा के देव प्रभाव पाना अवश्यक है, इनके बिना आत्म बोध कायम भी नहीं रह सकता। हम सुअर की तरह गन्दे प्रभावों में ही खुश रहते हैं, हमें भलाई के चन्दन का कोई बोध नहीं। सारे संसार में कोई शीशा नहीं, जो आत्मा का रूप दिखा सके। नेचर में देवात्मा का आना गज़ब की घटना है। वह रूहानी सूरज हैं, उनकी रोशनी में ही आत्म का बोध वा ज्ञान प्राप्त हो सकता है। बहुत सुन्दर वातावरण बन रहा था, अधिकारी जनों के हृदय प्रभावित हो रहे थे और वह गुरू महाराज के आगे सजदा कर रहे थे।

दूसरी सभा :- 10 बजे स्वास्तित्व सम्बन्धी आदेशों का पाठ और व्याख्या सम्बन्धी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई।

तीसरी सभा शाम 4.00 बजे :- यह सभा डा. विनोद जी खेड़ा ने करवाई। दो भजनों का गान किया गया, "मुझे मेरी हालत दिखाओ हे भगवान"।

दूसरा "हाय! वजूद अपने को क्योंकर बचाएंगे।"

हम सब ने फूल और कांटे देखे हैं। मैं 62 वर्ष गुजार कर अभी भी फूल नहीं बन सका। हम अपनी और दूसरों की हानि करने के लिए मजबूर हैं। भगवान देवात्मा ने अनेक दुखदाई कांटो को बदलकर खुशबुदार फूल बनाया है। मेरे दादी जी के पिता जी भी उनमें से एक हैं। वह गुरु ने इतना ईमानदार बना दिया कि वह बच्चों को दिवाली में मिठाई के स्थान पर गुड़ खिलाकर भी सन्तुष्ट थे, लेकिन बेईमानी करना गवारा नहीं था।

मेरे नाना जी राधास्वामी दयाल बाग के श्रद्धालु थे, परन्तु धन के अनुराग के कारण मां को भी पानी का टीका लगाते थे। मां के कहने पर भी कि बेटा, मेरे से पैसे ले ले, परन्तु मुझे ठीक दवाई दे, उन पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता था। भाई ने 200 रु० मां के लिए भेजे, उसमें भी बेईमानी कर ली। कोकीन बेचकर धन बनाया और तीन बड़े-बड़े मकान खड़े कर लिए। मान बढ़ाई का शिकार होकर एक मरीज़ की मौत का कारण बने, यह नहीं कहा कि बिमारी उनकी समझ से बाहर है। एक हजार रू० का घाटा पड़ने पर Depression का शिकार हो गए। चन्दा अखबार नहीं देना चाहते थे, समाज की मैंबरशिप देने के डर से मैंबर नहीं बनना चाहते थे। धन की गुलामी ने एक ओर दूसरों के लिए उनके जीवन काँटों भरा बना दिया था, दूसरी ओर मानबड़ाई के कारण माता के देहान्त पर और पोते के जन्म पर खूब धन खर्च करते थे। स्वाद अनुराग से सेहत बर्बाद हो गई। कई बार आत्म-घात के मनसूबे बनें।

पत्नी को गाली गलौच करते और उनकी पिटाई भी कर देते, उनको जाहिल समझकर कभी उनकी सलाह नहीं लेते थे। उन्होंने पति से तंग आकर अफीम खाकर आत्मघात करने का यत्न किया।

भगवान देवात्मा की रोशनी पाकर उन्हें अपना घृणित रूप नज़र आया, कई बार उनके पावों में गिरकर, गिड़-गिड़ा कर क्षमा मांगी और बुरे स्लूकों के लिए पछतावा पैदा हुआ। नाना जी की माता जी ने 60 वर्ष की उमर में पढ़ना शुरू किया। देवशास्त्र का पाठ करती थी। पहले बहु के हाथ का खाना नहीं खाती थी, पर एक दिन मेहतरानी की लड़की को गाड़ी में गोद में बिठा लिया। छुआछूत से ऊपर हो गई। गुरु परिवार की सेवा का अधिकार पाया। मेरी पड़नानी ने सारे जेवर दान कर दिए।

मेरे दादा जी, जिनका नाम समाज में श्रीमान

देवबल जी था, गुरु की शरण में आने से पहले उनका नाम मोजा राम जी था। वह बिल्कुल अन्दर बाहर से वहशी वा जंगली जिन्दगी व्यतीत करते थे। मैले - कुचैले कपड़े पहनते थे। बहुत ही घटियापन से जिन्दगी व्यतीत कर रहे थे। 18 वर्ष की उमर में परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण प्राप्त हो गई। जुआ छूट गया, मांसाहार छूट गया। देव आश्रम में रहने के योग्य हो गए। सुबह 4 बजे घण्टा बजाने लगे। लहौर में कर्मचारियों पर हमला हुआ, उनके ऊपर लेट गए, खुद जख्मी हो गए, उन्हें बचा लिया। उनकी कुर्बानियों से हमारे परिवार का बहुत भला हुआ है। मेरे चाचा जी समाज से दूर हुए और Property के लिए उनके बेटे को गोली मार दी।

यह सारी सभा बहुत प्रभावशाली थी, एक नये जन ने बहुत लाभ उठाया, हाजरीन भी बहुत प्रभावित थे।

27.08.2007 पहली सभा 8.30 बजे :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई।

विषय :- नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन लाने का भगवान देवात्मा का आद्वतीय कारज।

भजन, अर्चन, स्त्रोत के गान और व्याख्या के बाद सभापति जी ने दिली भावों से सहाय प्रार्थना की। फिर उन्होंने प्रश्न करके पूछा कि कौन सी गतियां नीच जीवन की गतियां हैं?

नाशुक्रेपन की एक डाक्टर साहिब की घटना बताई। स्वार्थ में अपने उपकारी को भी नहीं बख्शा। एक घर में मां के लिए गन्दे वा अपमान शब्द सुनकर दिल दहल जाता रहा कि जिसकी पूजा करनी चाहिए उसके साथ ऐसा गन्दा व्यवहार।

ईषा से भरकर एक - एक बहन यह कामना करती है कि उसकी बहन का दहेज किसी तूफान में खराब हो जाए, यह मनुष्य प्रकृति है। एक जेठानी, देवरानी के सन्दूक को आग लगा देती है। देवात्मा की शरण में आकर वह सच्चा परिशोध करने के लिए मजबूर हो गई।

एक बेटीने स्वीकार किया कि वह पिता की कातिल है, क्योंकि उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए पिता ने दहेज देने के लिए इतना कर्ज़ा उठा लिया कि न देने की सूरत में उन्होंने खुदखुशी कर ली।

देवात्मा ने एक - एक स्वार्थी स्त्री को कृतघ्नता दिखाकर मां के लिए सेवाकारी बना दिया।

सभापति जी ने बताया कि बच्चों को पढ़ाते समय, वह किस कदर बेरहमी से उन्हें पीटते थे, उनक चीखें निकल जाती थी। देवात्मा ने उनके प्रति मुझे मां जैसा व्यवहार करने के योग्य बना दिया। मेरी अपवित्रता चली गई। दूसरों के साथ मेरा सम्बन्ध हितकर बना दिया। शराबी - कबाबी और माता पिता को सताने वाले को माता पिता का सेवाकारी बना दिया। गुरु की महिमा ठीक - ठीक ब्यान नहीं हो सकती।

इस सभा में भी बहुत हितकर वातावरण बना, फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने धन और जन की अपील की। अच्छी मात्रा दान प्राप्त हुआ और फिर भाव प्रकाश की सभा आरम्भ की गई।

भाव प्रकाश

श्रीमान मधु सूदन जी :- इन सभाओं में मेरा ध्यान अपने अहं की ओर जाता रहा, कई भयानक गतियां याद आई। मैं सोचता हूँ कि जो कुछ मैं करता हूँ वही ठीक है, अंह के कारण दूसरों की बात नहीं सुनता। श्रीमान जी, मुझे हाथ बाँधकर कहते हैं कि फलां स्थान पर जा आओ, मैं उसमें मीन मेख निकालता हूँ। वह मेरे भले के लिए

कहते हैं, पर जब चला जाता हूँ, तो राहत मिलती है।

प्रभावों के विषय में सभा से बहुत लाभ हुआ, मुझे असरों का बोध ही नहीं। 24 तरीख की सभा में बताया गया कि बैटरी में सावन की सील ने सैल खत्म कर दिए, परन्तु मालिक समझता है कि उसके पास बैटरी है, उसी प्रकार मैं भी दिनों दिन सड़ गल कर खत्म हो जाऊँगा, सब सभाओं से लाभ हुआ है। एक सभा में "मेरे जीवन के दाता" नामक भजन सुनकर दिल गहराई से हिल गया। देव स्तोत्र के गान ने भी उस दिन बहुत प्रभावित किया। 'पता नहीं क्या नियम पूरा हुआ, इस सारे प्रोग्राम का बहुत असर हुआ है। मेरी यह अवस्था बनी रहे।

मनु चावला पदमपुर :- हमारा परिवार बहुत धर्मों में गया। मिथ्या के सिवा कुछ नहीं मिला। नाम जपकर भी घर में नर्क था। मेरी बुर्जुग दादी जी को कोई बुलाता तक नहीं था, उनकी सेवा तो दूर की बात है। सभाओं में आकर कुछ भला हुआ है, परन्तु अभी मेरी नीचता नहीं घटी। मेरे पिता जी को भी सत्संग में आकर लाभ हुआ है, अपनी माता के साथ उनको अपने सम्बन्ध की होश आई है। माता के सम्बन्ध में अपनी अवस्था को देखकर वह रोते रहे हैं। वह अब दादी जी का सत्कार करने लग गए और आखरी दम तक उनकी सेवा की। अब किताबें पढ़कर अपना भला करूंगा।

अजीत सिंह जी :- पाँचों भाई पाठी थे, परन्तु अपनी कभी कोई कमी दिखाई नहीं देती थी। दूसरों के प्रति अपने व्यवहारों का कुछ बोध नहीं था। हम तो गुरु के बहुत ऋणी हैं, जो हमारा भला हुआ है, उसे याद करके उनके चरणों में झुक जाता हूँ। कभी अपने वायदे और प्रतिज्ञा का ख्याल नहीं रहता था। अब मैंने किसी के कर्ज़ा दिलवाने में गवाही दी थी, वह समय पर कर्ज़ा न दे सका, उसकी जगह 20,000 रू० वापिस करके मन को शान्ति मिली। श्रीमान जी हमारा बहुत ख्याल रखते हैं। हमारा यह बहुत भला कर रहे हैं।

राजेन्द्र कुमार देहरादून :- मेरी पत्नी मेरी करतूतों से दुखी होकर यहां तक कह देती थी, कि मैं मर क्यों नहीं जाता। मेरे बच्चे को कुत्ते ने काट लिया, पत्नी रोती थी, परन्तु मैं शराब में धुत पड़ा था, मेरी पत्नी की इज्ज़त पर लोग नज़र रखते थे। वह औरत देवी है। गुरु ने बचा लिया, मैं कमाने, खाने के योग्य हो गया। मेरे मालिक ने मुझे शराब लाने को कहा, मैंने हाथ बांधकर जवाब दे दिया। गुरु नई होश देते है।

निछतर सिंह भुल्लर :- (एक नये जन) मैंने अपनी पत्नी को बहुत दुखी किया है। मैंने उसके जेवर भी बेच दिए। अब मैं वह जेवर उसे जल्दी बनवाकर दूंगा। उसके लिए एक सूट (जो कभी लेकर नहीं दिया।) लेकर जाऊँगा। कुछ फल मिठाई भेंट करूंगा। उसके गले में फूलों का हार डालकर क्षमा मांगूँगा।

हरदेव सिंह केसूपुरा :- मेरे एक सम्बन्धी की असमय मौत हो गई, मैंने उसको बचाने की कोशिश नहीं की। अब उसके बच्चों की सहायता करूंगा।

अवतार सिंह जी बराड़, मोगा :- जिस प्रकार के महान गुरु मुझे मिले हैं, उस प्रकार की मैं कोई सेवा नहीं करता। मैं 20-25 साल बाद अपने एक नगरवासी को मिलने दिल्ली गया। निश्चित स्थान पर हमने मिलना था, हम एक दूसरे को पहचान न सके। बाद में उसने बताया कि मैं तो सोचता था कि तू एक बूढ़ा, कुबड़ा और मरियल सा होगा, तू तो पूरा स्वस्थ्य है। यह सब गुरु की कृपा है। मैं पूरी ईमानदारी के साथ अपनी पत्नी का धन्यवाद करता हूँ, जिसने मुझे इस दर से जोड़

दिया। गुरु ने हर पहलु में मुझे राजा बना दिया। मैं पूरा धन्यवाद नहीं कर सकता।

श्रीमति भरपूर कौर जी :- (पत्नी श्रीमान अवतार सिंह जी) यह स्थान बाहर की दुनियां से बिल्कुल भिन्न है। हमारा घर नर्क से भरा हुआ था, उसका ब्यान करना भी कठिन है। पति हफ्ता-हफ्ता घर नहीं आते थे, मैं बच्चों को झूठा ही ऊंचा बोलती कि अपने पापा को बुलाओ ताकि किसी को शक न हो कि वह घर पर नहीं हैं, हमेशा सहम बना रहता कि कोई मेरी इज्जत को न हाथ डाले। अपने पास बिजली की तार रखती कि मैं अपने आपको बचा सकूँ। अब गुरु ने उन्हें ऐसा बना दिया कि उनकी तरफ से मुझे कोई तकलीफ नहीं। मेरी इसमें कोई खूबी नहीं।

सुभाष जी पंचकूला :- पिता जी की कृपा है, जो इस दर से जोड़ दिया, जितने निकट हुए हैं भला हुआ है, जितना दूर गए हैं हानि उठाई है। इन सभाओं में कई नई बातें समझ में आई हैं। परिवार में पूरा स्वर्ग है (उनका दिल भरा हुआ था)

डा. मुन्सा सिंह जी पदमपुर :- भगवान देवात्मा का लाख-लाख बार धन्यवादी हूँ कि उन्होंने मुझे उपकारी दिखा दिए। इस दर पर आकर नज़र आया है कि मैं कातिल था। मैं डाक्टर होकर अबारशन करवाता था, उसमें सहायक बनता था। इस बात का गन्दा रूप कभी नज़र नहीं आया, यहां आकर ही होश आई है। किसी धर्म ने मेरी बेईमानी नहीं दिखाई। अपने उस्ताद के साथ झूठ बोलता रहा, उसका कभी कर्ज़ा नज़र नहीं आया। आज माता पिता का भी नया रूप नज़र आया है। जिन माता पिता ने 18 लाख की जायदाद दी, उनका यह उपकारी रूप कभी नज़र नहीं आया। अपना बेईमान, गन्दा और काला रूप नज़र आ रहा है। अपना आप बेवकूफ और पागल नज़र आया है। पिता के कहने पर भी उनके पास एक रात नहीं रुक सका। श्रीमान जी ने हिदायत भी दी पर मैं नहीं माना। महसूस हो रहा है कि रूहानी सूरज की लाईट आ रही है, पर हमने दरवाजे बन्द किए हुए हैं। सुबह के साधन की बहुत जरूरत महसूस हो रही है। (वह बहुत जोश के साथ बोल रहे थे, परन्तु वह रो रहे थे, वास्तव देवात्मा के प्रभाव उन तक पहुँच रहे थे)।

सुन्दर लाल जी मल्लेका :- मेरे पास जुबान नहीं कि गुरु के उपकार ब्यान कर सकूं। बिजली के लिए कुंडीयां लगाते थे, बस की टिकट नहीं लेता था। गरीबी के कारण मजबूरी लगती थी। अब ढाई वर्ष से कुंडी नहीं लग रही। अभी भी एक दो स्थान कुंडी लगती है, महोत्सव से पहले बन्द हो जावेगी। मेरे बेटे को अपनी कमीयां नज़र आई हैं। मेरे पैरों पर सिर रखकर धाएं मारकर अपनी गल्तियां स्वीकार की और तोबा की। हम पूरे नारकी जीव थे। गन्दे कीड़े थे। हमारे घर में स्वर्ग है। गुरु का कर्ज़ा चुकाया नहीं जा सकता।

श्रीमान जगीर सिंह जी केसूपुरा :- मैं पापी, दुराचारी, मासाहारी, मिथ्याचारी तो था ही बीड़ी भी पीने लग गया था। गुरु ने इस बर्बादी से बचा लिया। मैं श्रीमान जी की सभाओं से नफरत करता था, पर अब जो दान इस दर से मिला है, उसका कर्ज़ा नहीं उतार सकता। श्रद्धा, कृतज्ञता तो कुछ पता ही नहीं था। विरासत में नीच भाव बहुत मिले हैं। पापों का परिशोध करूंगा। अपनी नीचताएं लिखता था। वह साधन छोड़ दिया, अपने उपकारियों को भूल जाता हूँ। पागल हो जाता हूँ। सभाओं में अपना आप कांटा दिखाई दिया है। अंह से पागल होकर दूसरों का अपमान करता हूँ। काश! समाज के लिए कुछ सेवाकारी हो सकूं। (यह डब वाली

मन्दिर के लिए सेवाकारी होते रहते हैं।)

श्रीमान जगजीत सिंह जी (लुधियाना से) मैं 26, 27 की सभाएं सब सुनी बहुत लाभकारी हुई। आपने और बलबहादुर सिंह जी ने जो संग्राम किया है, उसके लिए धन्यवादी हूँ। गुरु महाराज से सम्बन्ध जोड़कर बहुत खुशीयां प्राप्त हुई हैं। सम्बन्धों में मेल आया है। चारों जगतों के उपकार महसूस हुए हैं। यह विचार आता रहता है कि जीवन में कांटे और रुकावटे हैं, गुरू महाराज के निकट होकर ही उनसे छुटकारा मिल सकता है। जीवन में सेवा और समर्पण के भाव पैदा कर सकूँ।

जो सभा आज विश्व, मनुष्य और देवात्मा के विषय में करवाई थी, वह अपनी मासिक पत्रिका में अवश्य देना, ताकि जिन्होंने यह सभा नहीं सुनी, वह लाभ पहुंचा सकें। आप मुझ नाचीज़ के साथ सम्बन्ध रखकर मुझे लाभ पहुंचा रहे हैं। बार-बार आपको धन्यवाद देता हूँ और आपको गुरु सेवा में लगा देखकर मुझे भी कुछ करने की प्रेरणा मिलती है।

ओम प्रकाश जी आदर्श :- श्रीमान विनोद जी खेड़ा ने जिस प्रकार फूल और कांटों का उदाहरण देकर गुरु महाराज के देव प्रभावों का वर्णन किया, वह बहुत सराहनीय है। उनकी विद्वता, विषय का ज्ञान और व्याख्यान का अन्दाज़ दिलों को छूता है। आशा है आप अपनी इस मेहनत को साकार करने के लिए धर्म जीवन और हित स्त्रोत की शोभा को बढ़ाओगे और अन्य जनों को भी लाभ पहुंचाओगे।

समय बहुत होने के कारण भाव प्रकाश बन्द किए गए। हाजरीन को लिखकर देने के लिए कहा गया। गुरु महाराज, सहायकारी शक्तियों और धर्मशाला के प्रबन्ध का धन्यवाद करते हुए यह सभा समाप्त की गई। सभा करने वालों, भजन गाने वालों का भी आभार प्रगट किया। देव आरती के गान और चार बार जय ध्वनि करके यह हितकर उत्सव की समाप्ति हुई।

(एक सेवक)

गुरू महाराज ने फरमाया है।

1. सभा या साधन वो हितकर है जो आत्मा में उच्च परिवर्तन ला सकता है। साधन का लक्ष्य ही यह है कि आत्मा के अन्दर उच्च परिवर्तन आये। यदि ऐसा नहीं होता है तो साधन और सभा का महत्त्व पूरा नहीं होता। हर साधन के साथ कुछ न कुछ उच्च परिवर्तन पैदा होना चाहिए।
2. यदि आपके द्वारा किसी का शुभ साधन हो सके तो आपका जीवन उस हद तक हितकर है।
3. ऐसे आत्मा की जरूरत है जो मोक्ष और विकास के सच्चे अर्थ में इच्छुक हों। जो मोक्ष और विकास के साधन में जुट सकें। ऐसी आत्मा को लेकर ही आगे सिलसिला चल सकता है। तब ही हम सही शब्दों में कोई स्थाई काम कर सकते हैं। काश! हमें ऐसे आत्मा प्राप्त हों।
4. कई प्रकार के संसारिक पदार्थ और सम्बन्धियों को त्याग करने की जरूरत है। जो-जो चीज़ उच्च जीवन के मार्ग में रोक लगाये उसे त्यागने की जरूरत है। यदि आप ऐसा न कर सकें तो आपका नाश सम्भव है।

शुभ संग्राम
पदमपुर - (राजस्थान)

18 जुलाई 2007 को श्रीमान अनिल कुमार जी की माता जी के सम्बन्ध में श्रद्धांजली सभा अग्रवाल धर्मशाला में रखी गई। 12.00 बजे के लगभग श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कल्याण से यहां पहुंच गए। 2 बजे के लगभग यह सभा शुरू हुई। इस सभा में देह त्यागी के जीवन के सुन्दर गुणों का और जीवन में उनके तप का वर्णन किया गया। उनके परिवारिक जनों को जो सदमा पहुंचा है, उसके लिए संतावना देते हुए यह अपील की उनके गुणों को कीमती दौलत समझकर धारण करना चाहिए। कई जन भावुक होकर आंसू बहा रहे थे। अन्त में देह त्यागी के सम्बन्ध में शुभ कामना सम्बन्धी गीत गाकर शुभ कामना की गई।

पदमपुर निवासियों के ज़ोर देने पर 18 जुलाई से 22 जुलाई सुबह तक 7 सभाएं की गई, जिसमें सेवक और श्रद्धावान अच्छी संख्या में पहुंचते रहे।

डबवाली :- 21 सितम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान जगदीश प्रसाद जी, श्रीमान सीताराम जी चण्डीगढ़ से सुबह चलकर डबवाली दोपहर तक पहुंच गए। मन्दिर की देख-रेख नरेन्द्र जी धीमान तकरीबन एक माह से अच्छी तरह कर रहे हैं। पार्टी के लिए अपनी-अपनी नई चारपाईयां तैयार की, सफाई करवाई और परिवारों को जाकर मिले, वह बहुत खुश हुए।

बातचीत के द्वारा हितकर संग्राम किया गया। 22 तारीख सुबह मन्दिर की खूब सफाई करके बिछाई करके छवि के आगे फूल भेंट किए गए। 8.30 बजे सुबह सभा की गई। पहले सबने मिलकर भजन का गान किया, फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सभा करवाई। धर्म सम्बन्धियों के भिन्न कुछ पड़ोसी जन भी आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि नेचर क नियम अटल हैं और नेचर के चारों जगत उसके अधीन हैं। नेचर का यह नियम है कि जो अस्तित्व दूसरों के काम आता है, लाभकारी बनता है, सेवाकारी है, उसकी रक्षा होती है, उसका विकास होता है। यह नियम बेजान जगत, उन्नित जगत, पशुओं और मनुष्यों पर लागू है। भेड़ियों को और सांपों को कोई नहीं बचा सकता है। जिस प्रकार हवा, पानी और खुराक हमारे जीवन के लिए अवश्यक है, उसी प्रकार अपने से निकल दूसरों के काम आने से धर्म आरम्भ होता है। जो केवल अपने लिए जीता है, उसकी जिन्दगी बर्बाद हो जाता है। एक नौजवान जोड़ा सभा में लेट आया तो उनके साथ बातचीत करके उन्हें पुस्तकें दी। वह देरी से आने के लिए दुखी हो रहे थे।

थराजवाल :- 22 सितम्बर को श्रीमान जी सब श्रद्धावानों के घरों में जाकर मिले। महा सिंह जी को लेकर लगभग परिवारों को मिलें, उन्हें सभा का पता दिया। श्रीमान अजमेर सिंह जी का 5 अप्रैल को देहान्त हो गया था, उनके परिवारिक जनों के पास अफसोस प्रगट किया। समाज वा गुरु से जुड़े रहने की प्रेरणा की।

रात की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी के तीनों बेटों वा उनके परिवार वालों को करवाई। इसमें बताया गया कि पूजनीय भगवान फरमाते हैं कि मनुष्य को मिथ्या पाप बर्बाद करते हैं। यह ठोस सचाई है। इस बर्बादी का चित्र खींचा गया।

23 सितम्बर की सुबह की सभा में भी 20 - 25 जनों की हाजरी थी। इस सभा में बताया गया कि जो ज्ञान गुरु महाराज देते हैं, वह कहीं नहीं मिलता। मिथ्या धर्म राख की चुटकी से ईलाज करना चाहते हैं, देव धर्म वैज्ञानिक धर्म है। यह पी. जी. आई. की तरह आत्मिक रोगों का ईलाज करता है। यह मनुष्य को उसके परिचालिक भावों का ज्ञान देता है। इस ज्ञान के बिना मनुष्य बर्बाद हो रहा है। यह ज्ञान देवात्मा के बिना किसी ने नहीं दिया। हमारे भावों को देवात्मा की रोशनी उज्जवल करती है। इस ज्ञान के बिना जीवन accidents से भरते रहते हैं। इस ज्ञान की मनुष्य को अवश्यकता है। यह काफी प्रभावदायक सभा रही। 3 बजे एक और सभा के लिए आयोजन किया गया। इसमें काफी संख्या में स्त्री पुरुष शामिल हुए। जन्डा वाला से भूतपूर्व सरपंच मोहन सिंह जी और उनके पिता भी पहुंच गए। सभा में देव धर्म की निराली संगत के लोगों के विषय में बताया गया कि इस संगत के प्रभावों द्वारा नीच जीवनों में शुभ परिवर्तन पैदा होता है। उदाहरणों द्वारा समझाया गया। बहुत सुन्दर मण्डल पैदा हुआ। कई नौजवानों ने अच्छे प्रभाव हासिल किए। शाम को श्रीमान जी कल्याण पहुंच गए।

कल्याण :- 23 सितम्बर की सुबह यहां एक सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें उन्होंने नीच संगत से होने वाली हानियों के विषय में बताया। ऐसी बुरी संगत से दूर रहने की ज़ोरदार प्रेरणा की बताया गया कि प्रत्येक मनुष्य को ऐसे प्रभावों की अवश्यकता है कि उसे उसमें भली संगत में रहने की इच्छा पैदा हो। देवात्मा के प्रभावों के द्वारा ही मनुष्य को ऐसा रूहानी वातावरण मिल सकता हैं और जीवन के असल लक्ष्य की होश आ सकती है।

शाम की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि धर्म का राज्य और पाप का राज क्या होता है? मानव हृदयों पर उच्च भावों का राज्य हो तो धर्म का राज है। नीच शक्तियों का अधिकार हो तो पाप का राज है। उच्च भावों, ईमानदारी, पवित्रता और अपनी नीचता स्वीकार करने की घटनाएँ बताई गई। परिशोध के साधनों से धर्म राज्य आता है।

24 सितम्बर की सुबह सभा में बताया गया है कि यह नेचर का अटल नियम है कि जो दूसरों के काम आते हैं, वह खुद रक्षा पाते हैं। हमारा हित दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। दूसरों के काम आने का नियम पूरा करके हमारा विकास है।

24 सितम्बर शाम की सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें जीवन लक्ष्य की ओर ध्यान फेरा गया। भिन्न-भिन्न प्रकार के नीच भाव मनुष्य को अपनी तृप्ति में लगाए रखते हैं। लगभग सारा मनुष्य जगत अन्धेरे में अपना जीवन बर्बाद कर रहा है। पूजनीय भगवान की रोशनी मनुष्य को उसका लक्ष्य दिखाती है।

25 सितम्बर सुबह इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने विस्तार पूर्वक समझाया कि धर्म के जीवन के बिना जीना निम्न प्रकार से जीना है। धर्म बिना सब समान और सम्बन्धी विनाशकारी हैं। धन, जायदाद की महिमा है, धर्म की महिमा नहीं। पद प्रभुत्व की महिमा है, धर्म की नहीं। धर्म के बिना जीवन पशु स्तर का जीवन है। सब उपलब्धियां निरर्थक हैं, यदि धर्म नहीं। सबसे उत्तम धन धर्म है जो देवात्मा के दर से प्राप्त होना सम्भव है। यह सभा काफी प्रभावशाली थी, इसके साथ सत्संग का समापन हुआ।

एक सेवक

सरदार साहिब सरदार सावन सिंह जी की बरसी

सरदार साहिब की मृत्यु 2 जुलाई 1942 को हुई और सन 1943 से लेकर अब तक यह भाग्यवान परिवार प्रतिवर्ष उनकी बरसी मनाता आ रहा है। इस वर्ष यह बरसी उनके पड़पोते स. हरदियाल सिंह जी के घर मोहाली में 2 जुलाई को रखी गई। परिवार ने उत्साह से सब तैयारी की और श्रीमान बलदेव सिंह जी हर वर्ष की तरह सभा करवाई।

श्रीमान सुनील जी भुटानी और राठौर साहिब ने अपनी मधुर सुर ताल में माता पिता सम्बन्धी गीत गाकर बहुत पवित्र वातावरण पैदा किया।

सभापति जी ने परिवार का ध्यान फरिश्ता दादा, पड़दादा की विशेषताओं की ओर फेरा। उनकी सादगी बेमिसाल, ईमानदारी, परसेवा और कृतज्ञता की असाधारण विशेषताओं के कारण उन्हें सरदार साहिब की पदवी से अंग्रेजों द्वारा नवाजा गया। उनको मुरब्बे दिए, उन्होंने परिवार को मालामाल कर दिया।

उनकी बेटी हित लता जी दिओल, पोते कुलदीप जी, पृथ्वीपाल सिंह जी गिल ने कैनेडा तथा शिवपुरी से लिखकर अपने भाव भेजें, और श्रीमान जी का गर्व से चैलेंज था :-

"हम हैं ऐसे, कोई है ऐसा"

उनके परिवारिक जनों ने बड़े-बड़े खिताब पाए। अमरदीप ने वायु सेना, मैडल, रणदीप बरार ने Naval Engineer Admiral और बेटी हित लता जी ने Best Teacher Award पाया।

सबसे बढ़कर दिल वा दिमाग की अच्छी पूंजी मिली, जिससे सब बच्चे माता पिता का सम्मान करते हैं और अपने माता पिता का आभार मानते हैं।

हित लता जी ने बताया कि परिवार के बच्चे उनका और दिओल साहिब का बहुत ख्याल रखते हैं। रात को जरूरत पड़े तो भी भागे आते हैं।

श्रीमान गुरुभगत सिंह जी के बेटे पाली ने Islam और Bible करते हुए कहा, "Bible say" honour Thy Father and Thy Mother.

In Islam it is said, "Paradise lies in the feet of the mother.'

A person asked the prophet "who has claimed to the highest status"?

He replied "Thy mother" the person repeated the question three times, he replied the same, "Thy mother, fourth time he replied "Thy Father"

उन्होंने एक अफग़ान परिवार की सच्ची कहानी, सुनाई। एक बड़ा अमीर पिता रूस में अपना सब कुछ गवांकर अमरीका पहुंच गया। बेटा पढ़ना चाहता था। पिता ने पेट्रोल पंप पर नौकरी करके उसे पढ़ाया। बेटे को डिगरी मिल गई, परन्तु पिता की मृत्यु हो गई। बेटे के लिए उसने अपने आपको कुर्बान कर दिया। फरिश्ता सरदार साहिब के जिसने दर्शन किए हैं, वह आज तक उन्हें याद करते है और हमें प्रेरणाओं से भर देते हैं।

अब इस बरसी के दिन को Parents Day के रूप में मनाया जाता है। इसलिए सब बच्चों ने माता पिता के गले में फूलों के हार डालकर उनका सन्मान किया। बच्चे जिस प्रकार बगलगीर हो रहे थे, वह बहुत ही सुन्दर दृश्य था।

जिस समाज ने सरदार साहिब को फरिश्ता बनाया, उसके लिए 4000 रू० नकद दान दिया, चैक अलग मिला। सभा के बाद सबको लंच दिया गया।

(एक हाजरीन)

बरसी की सभा

एक जुलाई 2007 रविवार को श्रीमान जगदीश जी कुक्कड़ ने अपनी श्रद्धेय माता जी की पुन्य तिथि पर अपने घर में सभा रखी गई। 2 वर्ष पहले जुलाई में उनका देहान्त हुआ था।

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देव स्तोत्र का गान करने के बाद बड़े ही श्रद्धा पूर्ण भावों से व्याख्या की। इसके बाद सबने माता जी की फोटो पर फूल भेंट किए। इसके बाद सभापति जी ने प्रार्थना के बाद शुरू किया। सभा में लगभग 30 जन वर्तमान थे।

सभापति जी ने जीवन को मिठास भरा बनाने के लिए जीवन में धर्म की अवश्यकता है। इसके लिए सम्बन्धों में अच्छे व्यवहारों की अवश्यकता है। सबसे महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध माता पिता, भाई बहन, पति पत्नी का सम्बन्ध है। इन सम्बन्धों को मीठा बनाने के लिए कुछ नियम हैं।

सबसे पहले सब सम्बन्धों में उचित श्रद्धा और सन्मान के भावों को लाने की सच्ची उदाहरणें पेश की गई। फिर शुक्रगुजारी के भाव का सरल ढंग से ब्यान किया गया। अपने उपकारियों के उपकार स्मरण और उनकी उत्पत्ति करने की बेनती की गई।

दया के भाव की धर्म लाने में क्या भूमिका है सड़क पर जाते किसी जन की सहायता करना, बस में किसी स्त्री को सीट देना, गरीबों की मदद करना आदि दया भाव से सम्भव है, इनकी उदाहरणें दी गई।

आखिर में अपनी कमियों, गल्तियों को जानने और मानने से सम्बन्धों में सुधार आता है, इसके लिए अपनी-अपनी गल्तियों को स्वीकार करने की प्रेरणा की गई।

इसके बाद सभापति जी ने श्रीमति जय देवी जी के गुणों और सेवाओं का ब्यान किया, जो बहुत भाव पूर्ण था।

आखिर में सभा के बाद श्रीमान जगदीश जी ने सब हाजरीन को जलपान करवाया। हजार रू० दान में दिए। यह सभा परिवार वा हाजरीन के लिए लाभदायक रही।

(एक हाजरीन)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

देव जीवन से

करोड़ों लोग आत्मा रख के भी उसके सम्बन्ध में कोई ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखते। खाने, पीने, सोने, जागने, खेलने, कूदने, बातें करने, पैसे कमाने, जायदाद, इज्ज़त, प्रशंसा या वाह - वाह प्राप्त करने और इन्द्रियां आदि सम्बन्धी अलग - अलग सुख चाहना और अपने अलग सम्बन्धों में अपनी मूर्खता और अपनी मिथ्या विश्वास से कुसंसार और अलग - अलग प्रकार के पापों और अपराधों के साथ अपने और दूसरों के लिए महा भयानक हानियां, दु:ख, क्लेश और तकलीफ पहुँचाने की छूट और कुछ नहीं करते। इसलिए जीवनधारी हो के भी अपने अमूल्य जीवन के समबन्ध में अज्ञानी रहते हैं। वह जीवन रखते हैं पर नहीं जानते कि जीवन क्या चीज़ है और वो विश्वास के परिवर्तन सम्बन्धी अटल नाम के अधीन हो के किस प्रकार बनता और बिगड़ता है। किस प्रकार बिगड़ते - बिगड़ते एक दिन बिल्कुल खत्म हो जाता है। यह ज्ञान उनके अन्दर नहीं। वह इस महा अवश्यक ज्ञान से खाली हैं। वे अपने ही वजूद के सम्बन्ध में घोर अन्धकार की हालत में है।

ऐसे करोड़ों लोग (इसमें बादशाह, राजा, विद्यवान, मूर्ख, धनी, कंगाल, प्रौहित, पंडित, मौलवी, फादरी, पूज्य, उपदेशक, उस्ताद, शाहगिरद, शिक्षिक, विद्यार्थी, शिल्पी, किसान, दुकानदार, व्यापारी, बैरिस्टर, वकील, जज, मैजिस्ट्रेट, डाक्टर, इंजीनियर, गर्वनर और हकीम आदि सभी प्रकार के लोग शामिल हैं।) जो कुछ आत्मा के सम्बन्ध में एक या दूसरे प्रकार की प्रचलित कहानियों पर विश्वास करते हैं। वह सभी नेचर के नाम और सत्य के विरूध होने के कारण, मिथ्या कल्पना के छूट ओर कुछ नहीं। इसलिए उनके साथ केवल यही नहीं कि उनके अपने या जन समाज या साधारण जनों या पशुओं आदि का कोई सच्चा हित या भला नहीं होता और न ही हो सकता है। किसी प्रकार से हानि होती है। अलग - अलग धर्म मत रख के और अपने - अपने मत की शेखी मार के ऐसे सभी लोग अपने जीवन की हालत में अपने मत ओर किसी और मत की तुलना में कोई शेष्टता साबित नहीं कर सकते। बल्कि इसके उल्ट आपसी दवेश, झूठे पक्षपात, ईषा और अंहकार आदि से प्रेरित हो के एक या दूसरे के लिए अलग - अलग प्रकार से अत्यन्त हानिकारक सिद्ध होते हैं। कल्पना - मूल्क झूठे विश्वास जैसे अलग - अलग और कई प्रकार के होते हैं, वैसे ही वो महा हानिकारक भी होते हैं।

WPP - Regd. Postal No.Pb (0078) 2006
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

Published on 5th of the month
अक्टूबर - 2007

कुछ संसार की

1. बहुत खुशी की बात है कि बहुत अर्से के बाद भारतीय क्रिकेट टीम महेन्द्र सिंह धोनी के अधीन 20-20 क्रिकेट मैच में वर्ल्ड कप जीत आई है। सारे देश में इस जीत की बहुत खुशी मनाई गई है। टीम के भारत आगमन पर हार्दिक स्वागत किया है। लाखों जन मुम्बई हवाई अड्डे पर स्वागत के लिए पहुँचे। टीम को खुली बस की छत पर बिठा कर 30 किलोमीटर जलूस निकाला गया। टीम को क्या धन राशि देकर, क्या मकान देकर नवाजा गया। रूपयों को टीम पर मानों बारिश कर दी गई। क्रिकेट के प्रबन्ध ने टीम को 10 करोड़ रूपये दिए। युवराज को अलग से 1 करोड़ रूपये और दिये गए। एक सुन्दर विदेशी कीमती कार भी उसे भेंट की गई। जो सारे देश के नौजवानों ने इस जीत की खुशी में नाच और उल्लास का प्रदर्शन किया। उसका शब्दों में ब्यान नहीं हो सकता।

2. आनन्द शतरंज की गेम में वर्ल्ड चैमपियन बना।

3. पाकिस्तान में मुर्शरफ साहिब के विरूध आन्दोलन हो रहा है।

4. बर्मा में फौजी हकूमत के विरूध लोग सड़कों पर उतर आये। सैकड़ों बुधर्वीक्षु आगे आये और सैकड़ों आदमी वहा मारे गए।

गुरु महाराज ने फरमाया :-

हानि परिशोध के साधन की आवश्यकता है :- आप अपने अकड़ को छोड़कर अपनी असली हालत को देखो। अहंकार को छोड़ के अपनी हालत को प्रगट करो उससे उधार प्राप्त करने का यत्न करो। आप दाई से क्यों पेट छुपाते हो? विश्व के किसी हिस्से को बिगाड़ के आप महान नहीं बन सकते। जितना आपने नाश कर दिया है वो नाश ही कहा जाएगा सिलसिला बराबर जारी रहता है। इसलिए आप हानि परिशोध के साधन से गुजारो। अपना माथा धरती पर रगड़ो, आप नीच हो, दीन बनो। हृदय को स्वच्छ बनाओ। अपने तारणहार को पहचानो। ऐसे भाव पैदा होने से आपका भला होगा। इस चीज़ को मामूली आँखों से देखो। ऐसा हो कि आपके अन्दर हानि परिशोध का भाव पैदा हो। जहां-जहां आग लगी है। उसे जितना जल्दी हो सके बुझाने का यत्न करो। हितकर बनो, सेवाकारी बनो तो आपका भला होगा।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts